एकता

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग

श्री मुक्तानन्द आश्रम में हुए आनन्दमय जन्मदिवस २०१७ के सत्संगों से

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : १

लीलावती स्टूअर्ट सट्क्लिफ़

१९८० के दशक में, जब मैं लगभग २० वर्ष की थी, मैं गुरुदेव सिद्धपीठ गई। वहाँ पहुँचने के बाद जल्द ही मुझे गुरुचौक में श्रीगुरुमाई के दर्शन हुए। उन्होंने बहुत प्रेम से मेरा स्वागत किया! गुरुमाई जी ने मुझे कहा कि अपनी इस सेवा-यात्रा के दौरान आन्तरिक कार्य को समय देना, अपनी साधना पर केन्द्रण करना और अन्तर में देखना मेरे लिए लाभकारी होगा।

इस केन्द्रण को बनाए रखने के लिए मैं उत्साहित थी! मैं मन ही मन सोच रही थी कि यह मैं कैसे करूँगी। मैंने सोचा, 'मैं ख़ूब ध्यान करूँगी! और इसी तरह मेरा अन्तर-जगत, मेरे सामने स्वयं को प्रकट करेगा।'

जो सेवा मुझे मिली थी वह थी, अमृत में सम्पर्क अधिकारी की। उन दिनों अमृत में हर रोज़ लगभग तीन सौ लोग आया करते थे। मेरे आश्रम-निवास दौरान अमृत-पवेलियन के नवीनीकरण का प्रोजेक्ट चल रहा था जिसके अन्तर्गत बड़ी-बड़ी दीवारों को गिराया जा रहा था ताकि भोजन करने के क्षेत्र को और बड़ा किया जा सके। मेरी भूमिका थी, नवीनीकरण के प्रोजेक्ट मैनेजर्स के साथ कार्य करते हुए यह ध्यान रखना कि अमृत की गतिविधियाँ सुचारू रूप से चलती रहें। उदाहरण के लिए, हमें कभी-कभी भोजन करने हेतु बैठने की व्यवस्था, अस्थायी रूप से बगीचे में करना होती ताकि लोगों को भोजन करने व बैठने के लिए जगह मिल सके। कई बार, इस तरह सब कुछ सहजता से चला पाना मुझे चुनौतीपूर्ण लगता।

जब चीज़ें योजना के अनुसार नहीं होतीं तो मेरी इच्छा होती कि बस अमृत छोड़कर चली जाऊँ और ध्यान-गुफा में जाकर आन्तरिक कार्य करूँ, जिसके बारे में गुरुमाई जी ने मुझे मार्गदर्शित किया था। फिर भी, मैं जानती थी कि मेरे लिए सेवा करते रहना महत्त्वपूर्ण था और उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण था, श्रीगुरुमाई के मार्गदर्शन का पालन करना। अतः मैंने सोचा, 'यदि मैं ध्यान-गुफा में नहीं जा सकती तो सेवा करते-करते ही आन्तरिक कार्य करने का कोई तरीक़ा खोजूँगी।'

मैंने यह निश्चय किया कि लोगों से और अपने कार्य से जुड़ने से पहले मैं अपने हृदय-स्थान से जुड़ुँगी। मैंने देखा कि जितना अधिक मैंने अपने कृत्यों को अपने हृदय से जोड़ा, उतना ही अधिक काम मैं कर पाने लगी। जो समस्याएँ दुर्गम प्रतीत होती थीं वे वास्तव में हल करने में सहज थीं! मैंने पाया कि मुझे अपने अन्तर में प्रशान्ति का अनुभव करने के लिए ध्यान-गुफा में ही होने की जरूरत नहीं है। सक्रिय रहते हुए भी स्थिर होने में कितना अच्छा महसूस हो रहा था।

मेरी सेवा-यात्रा के अन्तिम दिनों में से एक दिन, मैंने श्रीगुरुमाई को सुन्दर बगीचों में सैर करते हुए देखा। गुरुमाई जी ने मुझे अपने साथ सैर करने के लिए आमन्त्रित किया और आश्रम में मेरे समय के विषय में मुझसे पूछा। "क्या किया तुमने?" गुरुमाई जी ने पूछा। मैं सम्पर्क अधिकारी की अपनी सेवा के बारे में बताने लगी। गुरुमाई जी ने फिर पूछा, ''क्या किया तुमने?'' मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ, अतः मैं चुप थी। गुरुमाई जी मुस्कराईं और कहा, ''तुमने दीवारें गिराईं !''

गुरुमाई जी ने मुझसे फिर से पूछा, 'क्या किया तुमने?' मैंने कहा, 'मैंने दीवारें गिराईं !' जिस क्षण मैंने स्वयं को ये शब्द कहते हुए सुना, मुझे समझ में आया कि मैं अमृत की दीवारों के विषय में नहीं बोल रही थी।

श्रीगुरुमाई ने मुझे यह दिखाया कि मेरे हृदय तथा मेरे कृत्यों के बीच कोई अवरोध नहीं हैं। श्रीगुरुमाई के मार्गदर्शन का अनुसरण करने से मैं सीखा कि सेवा अर्पण करते हुए मैं अपने हृदय के साथ किस प्रकार जुड़ सकती हूँ। मैंने पाया कि मेरे अन्तर का स्थान बाह्य स्थान में प्रवाहित हो सकता है और मुझे मार्गदर्शित करता है कि मैं अति सहजता से वह पा लूँ, जिसे पाने का मेरा उद्देश्य था।

धन्यवाद, गुरुमाई जी।

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : २

शरणी बर्न्ज़

वर्ष २००२ में मैं एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन के स्टाफ-मेम्बर के रूप में सेवा देने अपने घर, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया से श्री मुक्तानन्द आश्रम गई।

कुछ वर्ष वहाँ सेवा देने के पश्चात् एक दिन मुझे अपने घर की कुछ अधिक ही याद आ रही थी। अमरीका में उस दिन सार्वजनिक अवकाश था और आश्रम के बहुत-से सेवाकर्ता अपने परिवारों से मिलने गए हुए थे।

मुझे नित्यानन्द झील पर टहलने की तीव्र इच्छा हुई। वहाँ टहलते हुए मैं यह देखकर हर्षित हो उठी कि गुरुमाई जी मेरी ही ओर ही आ रही थीं। वे एक महिला के साथ चल रही थीं जिसे मैंने पहले देखा तो था परन्तु जानती नहीं थी। मैंने बहुत प्रसन्नता से श्रीगुरुमाई का अभिवादन किया और चलती रही।

गुरुमाई जी रुकीं और मेरा नाम लेकर मुझे पुकारा। उन्होंने पूछा कि क्या मैं उस महिला से मिली हूँ जिसके साथ वे चल रही थीं। मैंने कहा, “नहीं गुरुमाई जी, मैं नहीं मिली हूँ।” गुरुमाई जी ने बताया कि हम दोनों ऑस्ट्रेलिया के हैं अतः उन्होंने सोचा कि हम दोनों के लिए बहुत कुछ एक समान होगा। फिर उन्होंने मुझे अपने साथ झील पर घूमने के लिए कहा।

चलते हुए और बात करते हुए उस स्त्री ने तथा मैंने अपने-अपने जीवन की कहानियाँ सुनाईं और पाया कि हम दोनों में सच में बहुत कुछ समान था। मैंने महसूस किया कि घर के लिए मेरी याद का कष्ट समाप्त हो रहा था।

श्रीगुरुमाई ने कहा कि उन्होंने देखा है कि मेक्सिको के स्टाफ-मेम्बर और विज़िटिंग सेवाकर्ता बहुत अच्छे से मिलते-जुलते हैं, परन्तु ऑस्ट्रेलिया के सेवाकर्ताओं के साथ ऐसा नहीं था। हम सब हँस पड़े क्योंकि यह एकदम सच बात थी! लगभग प्रत्येक दिन मैं अमृत में एक लम्बी मेज़ पर मेक्सिको के सेवाकर्ताओं को उसके चारों ओर बैठा देखती। वे सभी बड़ी प्रफुल्लता और उल्लास के साथ आपस में हँस-बोल रहे होते थे।

एक-दो दिन बाद, श्रीगुरुमाई के आग्रह पर आश्रम में ऑस्ट्रेलिया के सभी सेवाकर्ताओं के लिए एक प्रसाद-सभा रखी गई। जो कुछ भी हमें परोसा गया था, वह सब ऑस्ट्रेलिया का था! ऑस्ट्रेलिया की

चॉकलेट, कुकीज़, मिठाईयाँ, केक, तथा ऑस्ट्रेलिया की चाय। हममें से ऐसे बहुत-से लोग थे जो पहले कभी मिले नहीं थे या कभी एक-दूसरे को जानने के लिए हमने समय नहीं निकाला था। अब ऐसा करने के कारण मेरा हृदय गद्‌गद्‌ हो उठा। हमने अपनी साधना के अनुभव बताए और साथ ही ऑस्ट्रेलिया में अपने पसन्दीदा स्थानों और वहाँ की गतिविधियों के बारे में बताया। और हममें से कोई ऑस्ट्रेलिया की कोई अनूठी बात कहता तो हम सब बड़े उत्साह से उसकी हाँ में हाँ मिलाते। और हम हँसे — बहुत हँसे।

मुझे याद है कि मैं चारों ओर ऑस्ट्रेलिया के अपने साथी सेवाकर्ताओं को देखते हुए कितना सहज, खुला और प्रसन्न महसूस कर रही थी। श्रीगुरुमाई द्वारा हमें एक साथ लाने के पहले मुझे यह पता भी नहीं था कि मैं उन सबके साथ जुड़ पाऊँगी। मैं कृतज्ञता से ओत-प्रोत हो गई थी।

सभा के कुछ दिन बाद मुझे फिर से श्रीगुरुमाई के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुमाई जी ने मुझसे कहा कि उन्हें आशा थी कि ऑस्ट्रेलिया के अपने साथी सेवाकर्ताओं के साथ दोपहर की चाय ने मुझे उल्लास से भर दिया होगा। मेरा पूरा अस्तित्व मुस्कराने लगा! बिलकुल, ऐसा ही हुआ था। ऐसी अतिसुन्दर आस्ट्रेलियन सभा द्वारा हम सबको एक साथ लाने के लिए मैंने गुरुमाई जी को धन्यवाद दिया।

श्रीगुरुमाई के साथ हुई इस परस्पर बातचीत, सम्पर्क तथा उनके प्रसाद से मैंने अपने आस-पास के लोगों के साथ, एक-साथ आने के महत्त्व को और अधिक स्पष्टता से समझा। मैंने गुरुमाईजी की सिखावनी को अपने हृदय से लगा लिया है, न केवल ऑस्ट्रेलिया के लोगों के साथ अपने व्यवहार में बल्कि उन सभी लोगों के साथ भी, जिनके सम्पर्क में मैं आती हूँ। बार-बार, मैंने उन लाभों का अनुभव किया है जो लोगों को जानने का प्रयत्न करने से प्राप्त होते हैं — अपनी समानताओं को जानने से तथा अपने सम्बन्धों की आत्मीयता का आनन्द लेने से।

धन्यवाद, गुरुमाई जी।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।